Shreemad Bhagawad Geeta: श्रीमद् - भगवद् - गीता

अथ क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोगो नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥

अर्जुन उवाच ।

प्रकृतिम् पुरुषम् च एव क्षेत्रम् क्षेत्रज्ञम् एव च ।

एतत् वेदितुम् इच्छामि ज्ञानम् ज्ञेयम् च केशव ॥ १३ - १ ॥

शब्द	शब्द - उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अर्जुन	Arjuna	Arjuna	अर्जुन ने	अर्जुन
उवाच	Uvaacha	said	कहा	म्हणाला
प्रकृतिम्	Prakritim	matter	प्रकृति	प्रकृति
पुरुषम्	PuruSham	spirit	पुरुष	पुरुष
च	Cha	and	और	आणि
एव	Eva	also	तथा	तसेच
क्षेत्रम्	Kshetram	field	क्षेत्र	क्षेत्र
क्षेत्रज्ञम्	Kshetradnyam	knower of the field	क्षेत्र को जाननेवाला	क्षेत्र जाणणारा
एव	Eva	also	तथा	तसेच
च	Cha	and	और	आणि
एतत्	Etat	this	यह	हे
वेदितुम्	Veditum	to know	जानना	जाणण्यास
इच्छामि	Ichchhaami	(I) wish	चाहता हूँ	इच्छितो
ज्ञानम्	Dnyaanam	knowledge	ज्ञान	ज्ञान
ज्ञेयम्	Dnyeyam	what ought to be known	जो जानना उचित हैं	जाणण्यायोग्य
च	Cha	and	और	आणि
केशव	Keshava	O Krishna!	हे श्रीकृष्ण !	हे श्रीकृष्णा !

अन्वय :-

अर्जुन उवाच - हे केशव प्रकृतिम् पुरुषम् च, क्षेत्रम् क्षेत्रज्ञम् च, ज्ञानम् ज्ञेयम् च एव एतत् (अहम्) वेदितुम् इच्छामि ॥ १३ - १ ॥

English translation:-

Arjuna said, "Matter and Spirit, also field and knower of field and also knowledge and what ought to be known – these I wish to learn O Krishna!"

हिन्दी अनुवाद :-

अर्जुन ने कहा, "हे श्रीकृष्ण! प्रकृति (सृष्टि) और पुरुष (सृष्टा), तथा क्षेत्र और क्षेत्र को जानेवाला, तथा ज्ञान और जानने योग्य सब कुछ, मैं अच्छी तरह से जानना चाहता हूँ।"

मराठी भाषान्तर :-

अर्जुन म्हणाला, "हे श्रीकृष्णा! प्रकृति आणि पुरुष तसेच क्षेत्र आणि क्षेत्र जाणणारा, ज्ञान आणि जे जाणण्यायोग्य आहे ते मी जाणू इच्छितो."

विनोबांची गीताई :-

विनोबांच्या गीताईमध्ये ह्या श्लोकाचा उल्लेख आढळत नाही.

श्री भगवान् उवाच ।

इदम् शरीरम् कौन्तेय क्षेत्रम् इति अभिधीयते ।

एतत् यः वेत्ति तम् प्राहुः क्षेत्रज्ञः इति तद् विदः ॥ १३ - २ ॥

शब्द	शब्द - उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
श्री भगवान्	Shree Bhagavaan	The Blessed Lord	श्री भगवान् ने	श्री भगवान
उवाच	Uvaacha	said	कहा	म्हणाले
इदम्	Idam	this	यह	हे
शरीरम्	Shareeram	body	शरीर	शरीर
कौन्तेय	Kaunteya	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
क्षेत्रम्	Kshetram	field	क्षेत्र	क्षेत्र
इति	Iti	thus	इस नाम से	अशा प्रकारे
अभिधीयते	Abhidheeyate	is called	कहा जाता है	संबोधिले जाते
एतत्	Etat	this	इस को	आणि याला
यः	YaH	he who	जो	जो
वेत्ति	Vetti	knows	जानता है	जाणतो
तम्	Tam	him	उस को	त्याला
प्राहुः	PraahuH	(they) call	कहते हैं	म्हणतात
क्षेत्रज्ञः	KshetradnyaH	knower of field	क्षेत्रज्ञ	क्षेत्र जाणणारा
इति	Iti	thus	इस नाम से	असे
तद्	Tad	(of) that	उनके तत्त्व को	त्यांचे (तत्त्व)
विदः	VidaH	Knowers	जाननेवाले ज्ञानीजन	जाणणारे (ज्ञानीजन)

अन्वय :- श्री भगवान् उवाच - हे कौन्तेय ! इदम् शरीरम् क्षेत्रम् इति अभिधीयते । यः एतत् वेत्ति, तम् क्षेत्रज्ञः इति तद् विदः प्राहुः ॥ १३ - २ ॥

English translation:-

The Blessed Lord said, "O Arjuna! This body is called field (Kshetra). He who knows this is called knower of field (Kshetradnya) by the sages.

हिन्दी अनुवाद :-

श्री भगवान् ने कहा, " हे अर्जुन ! यह शरीर, क्षेत्र इस नाम से कहा जाता है और इस क्षेत्र को जो जानता है उस को क्षेत्रज्ञ इस नाम से, उनके तत्त्व को जाननेवाले, ज्ञानीजन कहते हैं ।"

मराठी भाषान्तर :-

श्री भगवान म्हणाले, " हे कुंतीपुत्रा अर्जुना, या शरीरास क्षेत्र (शेत) असे म्हणतात व जो या शरीरास (शेतास) जाणतो; त्याला तत्त्वज्ञानी क्षेत्रज्ञ असे म्हणतात ."

विनोबांची गीताई :-

श्री भगवान् म्हणाले

अर्जुना ह्या शरीरास म्हणती क्षेत्र ज़ाणते ।

ज़ाणे हें क्षेत्र ज़ो त्यास क्षेत्रज्ञ म्हणती तसें ॥ १३ - २ ॥

क्षेत्रज्ञम् च अपि माम् विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत ।

क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोः यत् तत् ज्ञानम् मतम् मम ॥ १३ - ३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
क्षेत्रज्ञम्	Kshetradnyam	knower of the field	क्षेत्रज्ञ अर्थात् जीवात्मा	क्षेत्रज्ञ म्हणजे जीवात्मा
च	Cha	and	और	आणि
अपि	Api	also	भी	सुद्धा
माम्	Maam	Me	मुझे ही	मला
विद्धि	Viddhi	know	जान	जाण
सर्वक्षेत्रेषु	Sarva-KshetreShu	in all fields	सब क्षेत्रों में	सर्व क्षेत्रांमध्ये
भारत	Bhaarata	O Arjuna!	हे अर्जुन तुम	हे अर्जुना !
क्षेत्र - क्षेत्रज्ञयोः	Kshetra - Kshetra - DnyayoH	of the field and of the knower of the field	क्षेत्र - क्षेत्रज्ञ का अर्थात् विकाररहित प्रकृति का और पुरुष का	क्षेत्र क्षेत्रज्ञांचे (प्रकृतीचे व पुरुषाचे)
ज्ञानम्	Dnyaanam	knowledge	तत्त्व से जानना है	ज्ञान
यत्	Yat	which	जो	जे
तत्	Tat	that	वह	ते
ज्ञानम्	Dnyaanam	knowledge	ज्ञान है	ज्ञान
मतम्	Matam	is considered to be	मत है	मत आहे
मम	Mama	My / by Me	ऐसा मेरा	माझे

अन्वय :- हे भारत ! सर्वक्षेत्रेषु माम् अपि च क्षेत्रज्ञम् विद्धि । यत् क्षेत्र - क्षेत्रज्ञयोः ज्ञानम् , तत् ज्ञानम् (इति) मम मतम् (अस्ति) ॥ १३ - ३ ॥

English translation:-

O Arjuna! Know Me as the knower of fields in all fields. The knowledge of the Kshetra and Kshetradnya is deemed by Me as the real / true knowledge.

हिन्दी अनुवाद :-

श्री भगवान् ने कहा , " हे भरतवंशी अर्जुन ! सब क्षेत्रों में क्षेत्रज्ञ अर्थात् जीवात्मा भी मैं ही हूँ , यह तुम जान लो । क्षेत्र - क्षेत्रज्ञ का अर्थात् विकाररहित प्रकृति का और पुरुष का जो तत्त्व से जानना है , वह ज्ञान ही तत्त्वज्ञान है ; ऐसा मेरा निश्चित मत है । "

मराठी भाषान्तर :-

श्री भगवान म्हणाले, " हे भरतकुलोत्पना अर्जुना, सर्व शरीररुप क्षेत्रांतील क्षेत्रज्ञ मीच आहे असेही जाण . क्षेत्र (शरीर) व क्षेत्रज्ञ (आत्मा) यांचे ज्ञान तेच यथार्थ ज्ञान होय असे माझे निश्चित मत आहे . "

विनोबांची गीताई :-

क्षेत्रज्ञ मी चि तो ज़ाण क्षेत्रांत सगळ्या वसें ।
क्षेत्र क्षेत्रज्ञ भेदास ज़ाणणें ज्ञान मी म्हणें ॥ १३ - ३ ॥

तत् क्षेत्रम् यत् च यादृक् च यद् विकारि यतः च यत् ।

सः च यः यत् प्रभावः च तत् समासेन मे शृणु ॥ १३ - ४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
तत्	Tat	that	वह	ते
क्षेत्रम्	Kshetram	field	क्षेत्र	क्षेत्र
यत्	Yat	which	जो	जे
च	Cha	and	और	आणि
यादृक्	Yaadruk	what like	जैसा है	जसे आहे
च	Cha	and	और	आणि
यद्	Yad	what / which	जिन	ज्या
विकारि	Vikaari	its modifications	विकारोंवाला है	विकारांनी युक्त
यतः	YataH	whence	जिस कारण से	ज्यापासून
च	Cha	and	और	तसेच
यत्	Yat	what	जो हुआ है	जे
सः	SaH	he	वह क्षेत्रज्ञ भी	तो (क्षेत्रज्ञ)
च	Cha	and	और	आणि
यः	YaH	what	जो	जो
यत्	Yat	what	जिस	ज्या
प्रभावः	PrabhaavaH	His power	प्रभाववाला है	प्रभावी
च	Cha	and	और	आणि
तत्	Tat	that	वह सब	ते
समासेन	Samaasena	in brief	संक्षेप में	संक्षेपाने
मे	Me	from Me	मुझ से	माझ्याकडून
शृणु	ShruNu	listen	सुनो	तू ऐक

अन्वय :- तत् क्षेत्रम् यत् च, यादृक् च, यद् विकारि (च), यतः च यत् , सः च यः , यत् प्रभावः च (अस्ति) तत् , (त्वम्) समासेन मे शृणु ॥ १३ - ४ ॥

English translation:-

What that field is? What its nature is? What its modifications are? Whence it is? Who He is? And what His powers are? – That hear from Me briefly.

हिन्दी अनुवाद :-

वह क्षेत्र क्या है , कैसा है , इसका स्रोत कहाँ है , इसकी विभूतियाँ क्या हैं ; तथा क्षेत्रज्ञ क्या है , उस की शक्तियाँ क्या हैं ; वह सब संक्षेप में , तुम मुझ से सुनो ।

मराठी भाषान्तर :-

ते क्षेत्र म्हणजे काय ? क्षेत्राचे स्वरूप , क्षेत्राचे विकार कोणते ? त्या क्षेत्रापासून कोणते कार्य निर्माण होते ? तसेच क्षेत्रज्ञ , त्याचे सामर्थ्य हे मी तुला सर्व थोडक्यात सांगतो . ते तू ऐक .

विनोबांची गीताई :-

क्षेत्र कोण कसें त्यांत विकार कुठले कसे ।
क्षेत्रज्ञ तो कसा कोण ऐक थोड्यांत सांगतों ॥ १३ - ४ ॥

ऋषिभिः बहुधा गीतम् छन्दोभिः विविधैः पृथक् ।

ब्रह्मसूत्र पदैः च एव हेतुमद्भिः विनिश्चितैः ॥ १३ - ५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
ऋषिभिः	RhiShibhiH	by sages	ऋषियों द्वारा	ऋषींकडून
बहुधा	BahuDhaa	in many ways	बहुत प्रकार से	पुष्कळ प्रकारांनी
गीतम्	Geetam	sung	गानस्वरूप कहा गया है	गाईलेले
छन्दोभिः	ChhandobhiH	in chants	वेदमन्त्रों द्वारा भी	वेदमंत्रांनी
विविधैः	ViviDhaiH	various	विविध	अनेक
पृथक्	Prithak	distinctive	विभागपूर्वक कहा गया है	वेगवेगळेपणाने
ब्रह्मसूत्र - पदैः	Brahmasuutra - PadaiH	in the apt words indicative of Brahman	ब्रह्मसूत्र के पदों द्वारा	ब्रह्मसूत्राच्या पदांनी
च	Cha	and	और	आणि
एव	Eva	also	भी	तसेच
हेतुमद्भिः	Hetu - MadbhiH	full of reasoning	युक्तियुक्त	युक्ति युक्त
विनिश्चितैः	Vi-NishchitaiH	very certain / decisive	भलीभाँति निश्चय किये हुए	चांगल्याप्रकारे निश्चित केलेल्या

अन्वय :- (इदम् ज्ञानम्) ऋषिभिः बहुधा , (तथा) विविधैः छन्दोभिः पृथक् हेतुमद्भिः विनिश्चितैः ब्रह्मसूत्रपदैः च गीतम् एव ॥ १३ - ५ ॥

English translation:-

This has been sung by sages in many ways, in various distinctive chants, in passages indicative of Brahman full of reasoning and certainty.

हिन्दी अनुवाद :-

कई ऋषियों द्वारा बहुत प्रकार से , गानस्वरूप कहा गया है और विविध वेदमन्त्रों द्वारा भी , विभाग पूर्वक कहा गया है ; तथा भलीभाँति निश्चय किये हुए , युक्तियुक्त ब्रह्मसूत्र के पदों द्वारा भी , विस्तार पूर्वक कहा गया है ।

मराठी भाषान्तर :-

हे क्षेत्रज्ञाचे ज्ञान , ऋषींनी , ऋग्वेदादि वेदांनी तसेच हेतूपूर्वक निश्चित केलेल्या ब्रह्मसूत्रांतील पदांनी ; अनेक प्रकारे गाईलेले आहे .

विनोबांची गीताई :-

ऋषींनीं भिन्न मंत्रांत गाइलें हें परोपरी ।
वर्णिलें ब्रह्म वाक्यांत सप्रमाण सुनिश्चित ॥ १३ - ५ ॥

महाभूतानि अहङ्कारः बुद्धिः अव्यक्तम् एव च ।

इन्द्रियाणि दश एकम् च पञ्च च इन्द्रियगोचराः ॥ १३ - ६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
महाभूतानि	Mahaa-Bhuutaani	the great elements	पाँच महाभूत	(पाच) महाभूते
अहङ्कारः	AhaMkaaraH	ego	अहंकार	अहंकार
बुद्धिः	BuddhiH	intellect	बुद्धि	बुद्धी
अव्यक्तम्	Avyaktam	the unmanifested	मूल प्रकृति	अव्यक्त (मूळ प्रकृती)
एव	Eva	also	भी	सुद्धा
च	Cha	and	और	आणि
इन्द्रियाणि	IndriyaaNi	the sensory organs	इन्द्रियाँ	इंद्रिये
दश	Dasha	ten	दस	दहा
एकम्	Ekam	the one (mind)	एक मन	एक मन
च	Cha	and	और	आणि
पञ्च	Pancha	five	पाँच	पाच
च	Cha	and	और	तसेच
इन्द्रियगोचराः	Indriya-GocharaaH	objects of the senses	इन्द्रियों के विषय अर्थात् शब्द , स्पर्श , रूप , रस और गन्ध	इंद्रियांचे विषय म्हणजे शब्द , स्पर्श , रूप , रस व गंध

अन्वय :- महाभूतानि , अहङ्कारः , बुद्धिः , अव्यक्तम् एव च , दश इन्द्रियाणि च , एकम् (मनः) इन्द्रियगोचराः पञ्च च ॥ १३ - ६ ॥

English translation:-

The great elements, ego, intellect and also the unmanifested, the ten senses and the one mind and the five objects of senses form the Kshetra.

हिन्दी अनुवाद :-

पाँच महाभूत , अहंकार , बुद्धि और मूल प्रकृति तथा दस इन्द्रियाँ , एक मन और पाँच इन्द्रियों के विषय - शब्द , स्पर्श , रूप , रस और गन्ध भी मिलकर यह शरीर तथा क्षेत्र निर्माण हुआ है ।

मराठी भाषान्तर :-

पंचमहाभूते , अहंकार , बुद्धी , अव्यक्त प्रकृती , दहा इंद्रिये , एक मन आणि इंद्रियांचे पांच विषय मिळून क्षेत्र निर्माण झाले आहे .

विनोबांची गीताई :-

पंच भूतें अहंकार बुद्धि अव्यक्त मूळ ज़ें ।
इंद्रियें अकरा त्यांस खेंचितें अर्थ पंचक ॥ १३ - ६ ॥

इच्छा द्वेषः सुखम् दुःखम् सङ्घातः चेतना धृतिः ।

एतत् क्षेत्रम् समासेन सविकारम् उदाहृतम् ॥ १३ - ७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
इच्छा	Ichchhaa	desire	इच्छा	इच्छा
द्वेषः	DveShaH	hatred	द्वेष	द्वेष
सुखम्	Sukham	pleasure	सुख	सुख
दुःखम्	DuHkham	pain	दुःख	दुःख
सङ्घातः	SaMghaataH	the aggregate / assemblage (body)	स्थूल देह का पिण्ड	स्थूल देहाचा पिंड
चेतना	Chetanaa	intelligence	चेतना	चेतना
धृतिः	DhritiH	firmness / fortitude	धैर्य	धैर्य
एतत्	Etat	this	यह	हे
क्षेत्रम्	Kshetram	field	क्षेत्र	क्षेत्र
समासेन	Samaasena	briefly	संक्षेप में	संक्षेपाने
सविकारम्	Savikaaram	with modifications	विकारों के सहित	विकारांसह
उदाहृतम्	Udaahritam	has been described	कहा गया है	सांगितले गेले आहे

अन्वय :- इच्छा , द्वेषः , सुखम् , दुःखम् , सङ्घातः , चेतना , धृतिः , एतत् सविकारम् क्षेत्रम् (मया) समासेन उदाहृतम् ॥ १३ - ७ ॥

English translation:-

Desire, hatred, pleasure, pain, assemblage (body), intelligence, firmness – the field (Kshetra) has been thus briefly described with its modifications.

हिन्दी अनुवाद :-

इच्छा , द्वेष , सुख , दुःख , स्थूल शरीर , चेतना तथा धैर्य - इस प्रकार विकारों के सहित , क्षेत्र का वर्णन , संक्षेप में किया गया है ।

मराठी भाषान्तर :-

इच्छा , द्वेष , सुख - दुःख , शरीर व इंद्रिये यांचा संयोग (संघात), चेतना आणि धैर्य इतक्या तत्त्वांच्या विकारासहित समुदायास (म्हणजे शरीरास) ; थोडक्यात क्षेत्र असे म्हटले आहे .

विनोबांची गीताई :-

इच्छा द्वेष सुखें दुःखें धृति संघात चेतना ।

विकार - युक्त हें क्षेत्र थोड्यांत तुज बोलिलों ॥ १३ - ७ ॥

अमानित्वम् अदम्भित्वम् अहिंसा क्षान्तिः आर्जवम् ।

आचार्योपासनम् शौचम् स्थैर्यम् आत्मविनिग्रहः ॥ १३ - ८ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अमानित्वम्	Amaanitvam	humility	श्रेष्ठता के अभिमान का अभाव	मानीपणा नसणे
अदम्भित्वम्	Adambhatvam	un-pretentiousness	दम्भाचरण का अभाव	ढोंगीपणा नसणे
अहिंसा	Ahimsaa	non-injury / harmlessness	किसी भी प्राणी को किसी प्रकार भी न सताना	अहिंसा (कोणत्याही प्राण्याला कोणत्याही प्रकाराने न सतावणे)
क्षान्तिः	KshaantiH	forgiveness	क्षमाभाव	क्षमाशीलता
आर्जवम्	Aarjavam	uprightness	मन और वाणी आदि की सरलता	ऋजुता / मनाचा आणि वाणीचा सरळपणा
आचार्योपासनम्	Aachaarya-Upaasanam	service of the preceptor / teacher / Guru	श्रद्धा और भक्ति सहित गुरू की सेवा	गुरूंची सेवा
शौचम्	Shaucham	purity	बाहर भीतर की शुद्धि	अंतर्बाह्य पावित्र्य
स्थैर्यम्	Sthairyam	steadfastness / steadiness	अन्तःकरण की स्थिरता	अंतकरणाची स्थिरता
आत्मविनिग्रहः	Aatma-VinigrahaH	Self - control	मन इन्द्रियों सहित शरीर का निग्रह	मन व इंद्रिये यांचा निग्रह

अन्वय :- अमानित्वम् , अदम्भित्वम् , अहिंसा , क्षान्तिः , आर्जवम् , आचार्योपासनम् , शौचम् , स्थैर्यम् , आत्मविनिग्रहः ॥ १३ - ८ ॥

English translation:-

Humility, unpretentiousness, harmlessness, forbearance, uprightness, service of the preceptor, purity (of thought and purpose) steadfastness and self – control.....

हिन्दी अनुवाद :-

अपने में व्यर्थ अभिमान और दिखावे का न होना , अहिंसा , क्षमाभाव , मन और वाणी की सरलता , श्रद्धा और भक्ति सहित गुरू की सेवा , बाहर - भीतर की शुद्धि , अन्तःकरण की स्थिरता और मन इन्द्रियों सहित शरीर का निग्रह ..

मराठी भाषान्तर :-

मानीपणा नसणे , दांभिकपणा नसणे , अहिंसा , क्षमाशीलता , अंतःकरणाचा सरळपणा , गुरूसेवा , अंतर्बाह्य शुचिर्भूतपणा , स्थिरता , मनोनिग्रह ...

विनोबांची गीताई :-

नम्रता दंभ - शून्यत्व अहिंसा ऋजुता क्षमा ।
पावित्र्य गुरु - शुश्रूषा स्थिरता आत्म - संयम ॥ १३ - ८ ॥

इन्द्रियार्थेषु वैराग्यम् अनहङ्कारः एव च ।

जन्म - मृत्यु - जरा - व्याधि - दुःख - दोष - अनुदर्शनम् ॥ १३ - ९ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
इन्द्रियार्थेषु	Indriya-ArtheShu	of sense objects	इस लोक और परलोक के सम्पूर्ण भोगों में	इंद्रियभोगांविषयी
वैराग्यम्	Vairaagyam	dispassion	आसक्ति का अभाव	आसक्तीचा अभाव
अनहङ्कारः	AnahankaaraH	absence of egoism	अहंकार का अभाव	अहंकाराचा अभाव
एव	Eva	also	भी	सुद्धा
च	Cha	and	और	आणि
जन्मः	JanmaH	birth	जन्म	जन्म
मृत्युः	MrutyuH	death	मृत्यु	मृत्यू
जरा	Jaraa	old age	वृद्धावस्था	वार्धाक्य
व्याधिः	VyaadhiH	disease	और रोग आदि में	रोग
दुःख	DuHkha	pain	दुःख	दुःख
दोष	DoSha	evil / lack of some quality or attribute	और दोषों का	(इत्यादींच्या बाबतीत) दोष (आहेत)
अनुदर्शनम्	Anu - Darshanam	perception of	बार बार विचार करना	वारंवार विचार करणे

अन्वय :- इन्द्रियार्थेषु वैराग्यम् , अनहङ्कारः एव च , जन्म - मृत्यु - जरा - व्याधि - दुःख - दोष - अनुदर्शनम् ॥ १३ - ९ ॥

English translation:-

Dispassion towards sense-objects, absence of egoism, perception of evils in birth, death, old-age, disease and pain.

हिन्दी अनुवाद :-

इन्द्रियों के विषयों से तथा इस लोक और परलोक के सम्पूर्ण भोगों में आसक्ति का अभाव ; अहंकार का भी अभाव , जन्म - वृद्धावस्था - रोग और मृत्यु आदि में , दुःखरूप दोषों का बार बार विचार करना और उन्हें देखना ..

मराठी भाषान्तर :-

इंद्रियांच्या विषयांविषयी वैराग्य , अहंकाराचा अभाव , जन्म , मृत्यु , म्हातारपण , रोग आणि दुःख यांच्या ठिकाणी दोषदृष्टीने पाहणे ...

विनोबांची गीताई :-

निरहंकारता चित्तीं विषयांत विरक्तता ।

जन्म - मृत्यु – जरा - रोग - दुःख - दोष - विचारणा ॥ १३ - ९ ॥

असक्तिः अनभिष्वङ्गः पुत्र दार गृह आदिषु ।

नित्यम् च सम चित्तत्वम् इष्ट अनिष्ट उपपत्तिषु ॥ १३ - १० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
असक्तिः	AsaktiH	non-attachment	आसक्ति का अभाव	आसक्तीचा अभाव
अनभिष्वङ्गः	Ana-BhiShvangaH	non-infatuation / non-identification (of self)	ममता का न होना	ममता नसणे
पुत्र	Putra	son	पुत्र	पुत्र
दार	Daara	wife	स्त्री	स्त्री
गृह	Griha	home	घर	घर
आदिषु	AadiShu	in these things etc.	और धन आदि में	इत्यादींच्या बाबतीत
नित्यम्	Nityam	always	सदा ही	सदा
च	Cha	and	तथा	च
सम	Sama	balance	समभाव रहना	समान
चित्तत्वम्	Chittatvam	of mind	चित्त का	चित्त
इष्ट	IShTa	desirable	प्रिय	प्रिय
अनिष्ट	AniShTa	undesirable	और अप्रिय	अप्रिय
उपपत्तिषु	UpapattiShu	happenings	की प्राप्ति में	प्राप्ती झाली असता

अन्वय :- असक्तिः , पुत्र - दार - गृह - आदिषु अनभिष्वङ्गः , इष्ट - अनिष्ट - उपपत्तिषु नित्यम् सम चित्तत्वम् च ॥ १३ - १० ॥

English translation:-

Non-attachment, non-infatuation with son, wife, home and the rest; constant equanimity of mind in the occurrence of the desirable and the undesirable...

हिन्दी अनुवाद :-

आसक्ति का अभाव , पुत्र – स्त्री - घर और धन आदि में ममता का न होना ; तथा सदा ही प्रिय और अप्रिय की प्राप्ति में चित्त का समभाव रहना ..

मराठी भाषान्तर :-

अनासक्ती , स्त्री – पुत्र - गृह इत्यादिकांत लंपट नसणे , इष्ट किंवा अनिष्ट प्रसंगांमध्ये मनाची समतोल स्थिती प्राप्त करणे ...

विनोबांची गीताई :-

निःसंग - वृत्ति कर्मांत पुत्रादींत अलिप्तता ।

प्रिय - अप्रिय लाभांत अखंड सम - चित्तता ॥ १३ - १० ॥

मयि च अनन्ययोगेन भक्तिः अव्यभिचारिणी ।

विविक्त देश सेवित्वम् अरतिः जनसंसदि ॥ १३ - ११ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
मयि	Mayi	to Me	मुझ परमेश्वर में	माझ्या ठायी
च	Cha	and	और	आणि
अनन्ययोगेन	Ananya-Yogena	by the yoga of non-separation	अनन्य योग के द्वारा	एकनिष्ठ भावाने
भक्तिः	BhaktiH	devotion	भक्ति	भक्ती
अव्यभिचारिणी	Avyabhi-ChaariNii	unswerving	अनन्य	एकनिष्ठ
विविक्त	Vivikta	solitary	एकान्त	एकांत
देश	Desha	place	शुद्ध देश और पवित्र जगह	देश
सेवित्वम्	Sevitvam	resort to	में रहने का स्वभाव	राहण्याचा स्वभाव
अरतिः	AratiH	distaste	प्रेमका न होना	आवड नसणे
जनसंसदि	JanasaMsadi	for the assembly of people	विषयासक्त मनुष्यों के समुदाय में	मनुष्यांच्या समुदायामध्ये

अन्वय :- मयि च अनन्ययोगेन अव्यभिचारिणी भक्तिः विविक्त - देश - सेवित्वम् जनसंसदि अरतिः ॥ १३ - ११ ॥

English translation:-

Unswerving devotion to Me in Yoga of non-separation (steadfastness), resort to solitary places while shunning assembly of people...

हिन्दी अनुवाद :-

मुझ परमेश्वर में अनन्य योग के द्वारा अव्यभिचारिणी भक्ति तथा एकान्त और शुद्ध - देश और पवित्र - जगह में रहने का स्वभाव और विषयासक्त मनुष्यों के समुदाय में अरुचि तथा प्रेमका न होना ..

मराठी भाषान्तर :-

माझ्या म्हणजेच परमेश्वराच्या ठायी अनन्यभावाची अढळ भक्ती , एकांतवासात राहणे व जनसमुदायामध्ये रममाण न होणे ...

विनोबांची गीताई :-

माझ्या ठाईं अनन्यत्वें भक्ति निष्काम निश्चळ ।

एकांताविषयीं प्रीति जन संगात नावड ॥ १३ - ११ ॥

अध्यात्म ज्ञान नित्यत्वम् तत्त्व - ज्ञान - अर्थ - दर्शनम् ।

एतत् ज्ञानम् इति प्रोक्तम् अज्ञानम् यत् अतः अन्यथा ॥ १३ - १२ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अध्यात्म	Adhyaatma	about self	अध्यात्म	अध्यात्म
ज्ञान	Dnyaana	knowledge	ज्ञान में	ज्ञान
नित्यत्वम्	Nityatvam	constancy	नित्य स्थिति	नित्य स्थिती
तत्त्व	Tattva	principle / true	तत्त्व	तत्त्व
ज्ञान	Dnyaana	knowledge	ज्ञान	ज्ञान
अर्थ	Artha	meaningful	अर्थरूप परमात्मा को	अर्थपूर्ण (असा जो परमात्मा)
दर्शनम्	Darshanam	perception	ही देखना	(त्यालाच) पाहणे
एतत्	Etat	this	यह सब	हे (सर्व)
ज्ञानम्	Dnyaanam	knowledge	ज्ञान है	ज्ञान
इति	Iti	thus	ऐसा	असे
प्रोक्तम्	Proktam	declared	कहा है	म्हटलेले आहे
अज्ञानम्	Adnyaanam	ignorance	अज्ञान	अज्ञान
यत्	Yat	which	जो	जे
अतः	AtaH	to it	इस से	यापेक्षा
अन्यथा	Anyathaa	opposed	विपरीत है	विपरीत (आहे ते अज्ञान आहे)

अन्वय :- अध्यात्म - ज्ञान - नित्यत्वम् , तत्त्व - ज्ञान - अर्थ - दर्शनम् , एतत् ज्ञानम् इति प्रोक्तम् , यत् अतः अन्यथा (तत्) अज्ञानम् (इति प्रोक्तम्) ॥ १३ - १२ ॥

English translation:-

Constancy in Self-knowledge, perception of the end of the knowledge of truth; this is declared to be knowledge and what is exactly opposite to it is termed as ignorance.

हिन्दी अनुवाद :-

अध्यात्मज्ञान की प्राप्ति में संलग्न रहना और तत्त्वज्ञान द्वारा सर्वत्र परमात्मा को ही देखना ; यह सब ज्ञान प्राप्ति के साधन है और जो इसके विपरीत है वह अज्ञान है ; ऐसा कहा गया है ।

मराठी भाषान्तर :-

अध्यात्मज्ञानाचे नित्य अनुशीलन व तत्त्वज्ञानाच्या अर्थाचे म्हणजे मोक्षाचे आलोचन करणे हे सर्व गुण म्हणजे ज्ञान आहे ; ह्याहून जे विपरीत (उलट) ते अज्ञान होय .

विनोबांची गीताई :-

आत्म - ज्ञानीं स्थिर श्रद्धा तत्त्वतां ज्ञेय - दर्शन ।
हें ज्ञान बोलिलें सारें अज्ञान विपरीत ज्यें ॥ १३ - १२ ॥

ज्ञेयम् यत् तत् प्रवक्ष्यामि यत् ज्ञात्वा अमृतम् अश्नुते ।

अनादि - मत् परम् ब्रह्म न सत् न असत् उच्यते ॥ १३ - १३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
ज्ञेयम्	Dnyeyam	ought to be known	जानने योग्य है	जाणण्यास योग्य
यत्	Yat	which	जो	जे
तत्	Tat	that	उसको	ते
प्रवक्ष्यामि	Pravakshyaami	(I) will declare	भलीभाँति कहूँगा	(मी) चांगल्याप्रकारे सांगेन
यत्	Yat	which	जिस को	जे
ज्ञात्वा	Dnyaatvaa	knowing	जानकर मनुष्य	जाणल्यावर (मनुष्य)
अमृतम्	Amritam	immortality	परमानन्द को	परमानंद
अश्नुते	Ashnute	(one) enjoys / attains to	प्राप्त होता है	प्राप्त करून घेतो
अनादि	Anaadi	without beginning	अनादि	अनादी
मत्	Mata	the one	मात्र	केवळ
परम्	Param	supreme	परम	श्रेष्ठ
ब्रह्म	Brahma	Brahman	ब्रह्म	(पर) ब्रह्म
न	Na	not	न ही	नाही
सत्	Sat	existent / being	अस्तित्त्वपूर्ण	अस्तित्वात असणे
न	Na	not	न ही	नाही
असत्	Asat	non-existent / non-being	और बिना अस्तित्त्वपूर्ण	अस्तित्वात नसणे
उच्यते	Uchyate	is called	कहा जाता है	म्हणतात

अन्वय :- यत् ज्ञेयम् , यत् ज्ञात्वा (जीवः) अमृतम् अश्नुते , तत् प्रवक्ष्यामि । तत् अनादि - मत् परम् ब्रह्म सत् न , असत् च न इति उच्यते ॥ १३ - १३ ॥

English translation:-

I will declare that which ought to be known, knowing which one attains / enjoys immortality. Beginning-less is the Supreme Brahman. That is called neither existent (Sat) nor non-existent (A-Sat).

हिन्दी अनुवाद :-

मैं तुम्हें जानने योग्य वस्तु , अर्थात् परमात्मा के बारे में , अच्छी तरह से कहूँगा ; जिसे जानकर मनुष्य मुक्ति को प्राप्त करता है । वह अनादि परब्रह्म परमात्मा , न ही सत् अर्थात् अक्षर या अविनाशी है , न ही असत् अर्थात् क्षर या नाशवान् है । वह इन दोनों से परे , अक्षरातीत है ।

मराठी भाषान्तर :-

जे जाणल्याने तुला मोक्षाची प्राप्ती होईल ते जाणण्यायोग्य ज्ञान मी तुला सांगतो . ते ज्ञान अनादि , श्रेष्ठ ब्रह्म आहे . त्याला सत् म्हणत नाहीत व असत् ही म्हणत नाहीत , म्हणजे ते अस्तित्वात आहे असेही नाही व अस्तित्वात नाही असेही नाही .

विनोबांची गीताई :-

ज्ञेय तें सांगतों ज्याच्या ज्ञानानें अमृतत्व चि ।
अनादि ज्रें पर ब्रह्म आहे नाहीं न बोलवे ॥ १३ - १३ ॥

सर्वतः पाणिपादम् तत् सर्वतः अक्षिशिरः मुखम् ।

सर्वतः श्रुतिमत् लोके सर्वम् आवृत्य तिष्ठति ॥ १३ - १४॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सर्वतः	SarvataH	everywhere	सब ओर	सर्व बाजूंनी
पाणिपादम्	PaaNipaadam	with hands and feet	हाथ पैरवाला	हातपाय असणारे
तत्	Tat	that	वह	ते (परब्रह्म)
सर्वतः	SarvataH	everywhere	सब ओर	सर्व बाजूंनी
अक्षिशिरः - मुखम्	AkshishiraH - Mukham	with eyes, heads and mouths	नेत्र सिर और मुखवाला	डोळे डोके आणि मुखे असणारे
सर्वतः	SarvataH	everywhere	सब ओर	सर्व बाजूंनी
श्रुतिमत्	Shrutimat	with ears	कानवाला है	कान असणारे
लोके	Loke	in the world	क्योंकि वह संसार में	या संसारात
सर्वम्	Sarvam	all	सब को	सर्वांना
आवृत्य	Aavritya	having enveloped	व्याप्त कर	व्यापून
तिष्ठति	TiShThati	exists	स्थित है	राहिले आहे

अन्वय :- लोके तत् सर्वतः पाणिपादम् , सर्वतः अक्षिशिरः - मुखम् सर्वतः श्रुतिमत् (अस्ति) , सर्वम् (च) आवृत्य तिष्ठति ॥ १३ - १४॥

English translation:-

With hands and feet everywhere, with eyes, heads and mouths everywhere, with ears everywhere – That (Brahman) exists in the world enveloping all.

हिन्दी अनुवाद :-

उस के हाथ और पैर सब जगह हैं। उस के नेत्र , सिर , मुख और कान भी सब जगह हैं ; क्योंकि वह सर्वव्यापी है।

मराठी भाषान्तर :-

त्या परब्रह्माला सर्वत्र हातपाय आहेत . सर्व बाजूंनी डोळे , मस्तके व मुखे आहेत . त्याला सर्वत्र कान आहेत . ते या विश्वात सर्वांना व्यापून राहिले आहे .

विनोबांची गीताई :-

सर्वत्र दिसती ज्यास हात पाय शिरें मुखें।
कान डोळे हि सर्वत्र सर्व झांकूनि ज़ें उरे ॥ १३ - १४॥

सर्व इन्द्रिय गुण आभासम् सर्व इन्द्रिय विवर्जितम् ।

असक्तम् सर्वभृत् च एव निर्गुणम् गुणभोक्तृ च ॥ १३ - १५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सर्व	Sarva	all	सम्पूर्ण	सर्व
इन्द्रिय	Indriya	the sensory organs	इन्द्रियों के	इंद्रिये
गुण	GuNa	characteristics / functions	विषयों को	गुण
आभासम्	Aabhaasam	splendour / shining	जाननेवाला है	जाणणारे
सर्व	Sarva	all	परन्तु वास्तव में सब	सर्व
इन्द्रिय	Indriya	the sensory organs	इन्द्रियों से	इंद्रिय
विवर्जितम्	Vivarjitam	without any senses	रहित है	रहित
असक्तम्	Asaktam	unattached	आसक्तिरहित होनेपर भी	आसक्तिरहित
सर्वभृत्	Sarvabhrit	supporting all	सबका धारण पोषण करनेवाला	सर्वांचे धारण पोषण करणारे
च	Cha	and	और	आणि
एव	Eva	also	भी	सुद्धा
निर्गुणम्	NirguNam	devoid of qualities	निर्गुण होनेपर	गुणरहित
गुणभोक्तृ	GuNa - Bhoktru	enjoyer of qualities	गुणों को भोगनेवाला है	गुणांचा भोग घेणारे
च	Cha	and	और	आणि

अन्वय :- (तत्) सर्व - इन्द्रिय - गुण - आभासम् , सर्व - इन्द्रिय - विवर्जितम् , असक्तम् , सर्वभृत् च एव निर्गुणम् गुणभोक्तृ च (अस्ति) ॥ १३ - १५ ॥

English translation:-

Shining by the functions of all the senses without having the sensory organs, unattached yet supporting all, being itself devoid of qualities yet it enjoys the qualities.

हिन्दी अनुवाद :-

वह प्राकृत इन्द्रियों के बिना भी , सूक्ष्म इन्द्रियों द्वारा , सभी विषयों का अनुभव करता है । सम्पूर्ण संसार का पालन पोषण करते हुए भी , आसक्तिरहित है तथा प्रकृति के गुणों से रहित होते हुए भी , जीवरूप धारण कर , गुणोंका भोक्ता है ।

मराठी भाषान्तर :-

ते परब्रह्म सर्व इंद्रियांच्या विषयांना जाणणारे असून , ते इंद्रियरहित आहे तसेच ते आसक्तिरहित असून , सर्व प्राणिमात्रांचे धारण - पोषण करणारे आणि निर्गुण असून ; सर्व गुणांचा उपभोग घेणारे आहे .

विनोबांची गीताई :-

असूनि इंद्रियातीत त्यांचे व्यापार भासवी ।
न स्पर्शतां धरी सर्व गुण भोगूनि निर्गुण ॥ १३ - १५ ॥

बहिः अन्तः च भूतानाम् अचरम् चरम् एव च ।

सूक्ष्मतत्वात् तत् अविज्ञेयम् दूरस्थम् च अन्तिके च तत् ॥ १३ - १६॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
बहिः	BahiH	without	बाहर	बाहेर
अन्तः	AntaH	within	भीतर	आत
च	Cha	and	और	आणि
भूतानाम्	Bhuutaanaam	of beings	(चराचर सब) भूतों के	चराचर सर्व प्राण्यांच्या
अचरम्	Acharam	the un-moving	अचर	अचर
चरम्	Charam	the moving	चर	चर
च	Cha	and	और	आणि
सूक्ष्मतत्वात्	Suukshtatvaat	due to its subtlety	सूक्ष्म होने से	सूक्ष्म असल्यामुळे
तत्	Tat	that	वह	ते
अविज्ञेयम्	Avidnyeyam	unknowable / incomprehensible	जानने में	न कळण्याजोगे
दूरस्थम्	Duurastham	remote / distant	दूर में भी स्थित	दूर असणारे
च	Cha	and	और	आणि
अन्तिके	Antike	near	अति समीप में	जवळ
च	Cha	and	और	आणि
तत्	Tat	that	वह	ते

अन्वय :- तत् भूतानाम् बहिः अन्तः च (अस्ति) अचरम् चरम् च एव (अस्ति) तत्, सूक्ष्मतत्वात् अविज्ञेयम् (अस्ति), दूरस्थम् च अन्तिके च (अस्ति) ॥ १३ - १६॥

English translation:-

Without and within all beings; the unmoving and also the moving, due to its subtlety it is incomprehensible. It (Brahman) is the nearest and it is the farthest. It is everywhere.

हिन्दी अनुवाद :-

सभी चर और अचर भूतों के बाहर और भीतर भी वही है। सूक्ष्म होने के कारण, वह मनुष्य की इन्द्रियों द्वारा, देखा या जाना नहीं जा सकता है; तथा वह सर्वव्यापी होने के कारण, अत्यन्त दूर भी है और समीप भी।

मराठी भाषान्तर :-

ते परब्रह्म सर्व प्राणिमात्रांच्या बाहेर व आतही आहे. ते चर असून अचरही आहे. ते सूक्ष्म असल्यामुळे जाणणे अशक्य आहे. ते अत्यंत दूर (अज्ञानींच्या दृष्टीने) आहे व अगदी जवळ (ज्ञानी लोकांच्या दृष्टीने) आहे.

विनोबांची गीताई :-

ज़ें एक आंत बाहेर जें एक चि चराचर।
असूनि जवळीं दूर सूक्ष्मत्वें नेणवे चि जें ॥ १३ - १६॥

अविभक्तम् च भूतेषु विभक्तम् इव च स्थितम् ।

भूतभर्तृ च तत् ज्ञेयम् ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च ॥ १३ - १७॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अविभक्तम्	Avibhaktam	undivided	विभाग रहित एक रूप से आकाश के सदृश परिपूर्ण होनेपर	विभागरहित (एकाच रूपाने आकाशाप्रमाणे परिपूर्ण असूनही)
च	Cha	and	भी	आणि
भूतेषु	BhuuteShu	in beings	चराचर सम्पूर्ण भूतों में	प्राणिमात्रांमध्ये
विभक्तम्	Vibhaktam	divided	विभक्त	विभागलेले
इव	Eva	as if	सा	जणू
च	Cha	and	तथा	आणि
स्थितम्	Stitam	existing	स्थित प्रतीत होता है	स्थित
भूतभर्तृ	Bhuutabhartru	supporter of beings	विष्णुरूप से भूतों को धारण पोषण करनेवाला	(विष्णुरूपाने) प्राणिमात्रांचे धारण पोषण करणारे
च	Cha	and	और	आणि
तत्	Tat	that	वह	ते
ज्ञेयम्	Dnyeyam	to be known	जानने योग्य परमात्मा	जाणण्यास योग्य परब्रह्म
ग्रसिष्णु	GrasiShNu	devouring / destroying	रुद्ररूप से संहार करनेवाला	(रुद्ररूपाने) संहार करणारे
प्रभविष्णु	PrabhaviShNu	generating	ब्रह्मरूप से सब को उत्पन्न करनेवाला है	(ब्रह्मदेवाच्या रूपाने) सर्वांना उत्पन्न करणारे
च	Cha	and	तथा	आणि

अन्वय :- तत् ज्ञेयम् अविभक्तम् भूतेषु विभक्तम् इव स्थितम्, भूतभर्तृ च ग्रसिष्णु च प्रभविष्णु च (अस्ति) ॥ १३ - १७ ॥

English translation:-

It (Brahman) is undivided and yet it seems to be divided in beings. It is supposed to be known as the supporter of beings. It devours and it generates.

हिन्दी अनुवाद :-

वह एक होते हुए भी, प्राणीरूप में अनेक दिखाई देता है। वह ज्ञान का विषय है, तथा सभी भूतों को उत्पन्न करनेवाला, पालन - पोषण करनेवाला और संहारकर्ता भी वही है।

मराठी भाषान्तर :-

ते परब्रह्म अखंड असून ते सर्व प्राणिमात्रांत वेगवेगळे असल्यासारखे दिसते. ते प्राणिमात्रांचे धारण - पोषण करणारे, संहार करणारे आणि त्यांना उत्पन्न करणारे आहे.

विनोबांची गीताई :-

भूत - मात्रीं न भेदूनि राहिलें भेदिल्यापरी।
भूतांस जन्म दे पाळी गिळी जें शेंवटीं स्वयें ॥ १३ - १७॥

ज्योतिषाम् अपि तत् ज्योतिः तमसः परम् उच्यते ।

ज्ञानम् ज्ञेयम् ज्ञानगम्यम् हृदि सर्वस्य विष्ठितम् ॥ १३ - १८॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
ज्योतिषाम्	JyotiShaam	of lights	ज्योतियों का	तेजांचे
अपि	Api	even	भी	सुद्धा
तत्	Tat	that	वह परब्रह्म	ते (परब्रह्म)
ज्योतिः	JyotiH	light	ज्योति एवं	तेज
तमसः	TamasaH	from darkness	मायारूपी अन्धकार से	अंधकार
परम्	Param	beyond / supreme	अत्यन्त परे	अत्यंत पलीकडे
उच्यते	Uchyate	is said to be	कहा जाता है	म्हटले जाते
ज्ञानम्	Dnyaanam	knowledge	बोधस्वरूप	ज्ञान
ज्ञेयम्	Dnyeyam	that which is to be	जानने के योग्य एवं	जाणण्यास योग्स
ज्ञानगम्यम्	Dnyaana-Gamyam	the goal of knowledge	तत्त्वज्ञान से प्राप्त करने योग्य है और	(तत्त्व) ज्ञानाने प्राप्त करून घेण्यास योग्य
हृदि	Hrudi	in the heart	सबके	हृदयात
सर्वस्य	Sarvasya	of all	हृदय में	सर्वांच्या
विष्ठितम्	ViShThitam	seated	विशेषरूप से स्थित है	विशेषरूपाने स्थित

अन्वय :- तत् ज्योतिषाम् अपि ज्योतिः (अस्ति) , तमसः परम् उच्यते , (तत्) ज्ञानम् ज्ञेयम् ज्ञानगम्यम् (अस्ति) सर्वस्य हृदि विष्ठितम् (अस्ति) ॥ १३ - १८ ॥

English translation:-

That Brahman, the light of all lights, is said to be beyond darkness; knowledge, the knowable, the goal of knowledge, seated in the hearts of all.

हिन्दी अनुवाद :-

वह सभी ज्योतियों का स्त्रोत , अन्धकार से परे है । वही ज्ञान है , ज्ञान का विषय है और वह अध्यात्म विद्या द्वारा जाना जा सकता है । वह ईश्वर रूप से , सब के अन्तःकरण में रहता है ।

मराठी भाषान्तर :-

ते परब्रह्म प्रकाशाला प्रकाशित करणारे व अंधाराच्या म्हणजे अज्ञानाच्या पलीकडचे आहे असे म्हणतात . ते ज्ञान (ज्ञानस्वरूप) , ज्ञेय (जाणण्याची वस्तू) व ज्ञानगम्य म्हणजे ज्ञानाने कळणारे असून सर्वांच्या हृदयात तेच स्थित आहे .

विनोबांची गीताई :-

ज्ञें अंधारास अंधार तेजाचें तेज बोलिलें ।
ज्ञानाचें ज्ञान तें ज्ञेय सर्वांच्या हृदयीं वसे ॥ १३ - १८ ॥

इति क्षेत्रम् तथा ज्ञानम् ज्ञेयम् च उक्तम् समासतः ।

मद् भक्तः एतत् विज्ञाय मद् भावाय उपपद्यते ॥ १३ - १९॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
इति	Iti	thus	इस प्रकार	अशाप्रकारे
क्षेत्रम्	Kshetram	field	क्षेत्र	क्षेत्र
तथा	Tathaa	also / as well as	तथा	तसेच
ज्ञानम्	Dnyaanam	knowledge	ज्ञान	ज्ञान
ज्ञेयम्	Dnyeyam	the knowable	जानने योग्य परमात्मा स्वरूप	जाणण्यास योग्य
च	Cha	and	और	आणि
उक्तम्	Uktam	have been stated / said	कहा गया	सांगितले आहे
समासतः	SamaasataH	briefly	संक्षेप से	संक्षेपाने
मद्	Mad	My	मेरा	माझा
भक्तः	BhaktaH	devotee	भक्त	भक्त
एतत्	Etat	this	इसको	हे
विज्ञाय	Vidnyaaya	having known	तत्त्व से जानकर	(तत्त्वतः) जाणून
मद्	Mad	My	मेरे	माझ्या
भावाय	Bhaavaaya	to (My) being	स्वरूप को	स्वरूपाला
उपपद्यते	Upapadyate	attains / enters	प्राप्त होता है	प्राप्त करून घेतो

अन्वय :- इति क्षेत्रम् , तथा ज्ञानम् ज्ञेयम् च समासतः उक्तम्, एतत् विज्ञाय , मद् - भक्तः मद् - भावाय उपपद्यते ॥ १३ - १९॥

English translation:-

Thus the field, knowledge and that which has to be known have been briefly described. My devotee, on knowing this, is well deserved to attain My state.

हिन्दी अनुवाद :-

इस प्रकार मेरे द्वारा , शरीररूपी - क्षेत्र तथा तत्त्वज्ञान और जानने योग्य परमब्रह्म - स्वरूप ; संक्षेप से कहा गया है । मेरा भक्त , इसको तत्त्वसे जानकर मेरे स्वरूप को प्राप्त होता है ।

मराठी भाषान्तर :-

याप्रमाणे क्षेत्र म्हणजे शरीर , ज्ञान म्हणजे ज्ञानसाधने व ज्ञेय म्हणजे परब्रह्म हे मी थोडक्यात सांगितले आहे . हे सर्व यथार्थ जाणून , माझा भक्त , माझ्या स्वरूपाला प्राप्त होतो .

विनोबांची गीताई :-

संक्षेपें वर्णिलें क्षेत्र ज्ञान ज्ञेय तसें चि हें ।

ज़ाणूनि भक्त ज़ें माझा माझें सायुज्य मेळवी ॥ १३ - १९॥

प्रकृतिम् पुरुषम् च एव विद्धि अनादी उभौ अपि ।

विकारान् च गुणान् च एव विद्धि प्रकृतिसंभवान् ॥ १३ - २० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
प्रकृतिम्	Prakrutim	matter	प्रकृति	प्रकृती
पुरुषम्	PuruSham	Spirit	पुरुष	पुरुष
च	Cha	and	और	आणि
एव	Eva	even	ही	ही
विद्धि	Viddhi	know	तुम जान लो	(तू) जाण
अनादी	Anaadi	beginning-less	अनादि	अनादी
उभौ	Ubhau	both	इन दोनों को	दोघे
अपि	Api	also	भी	सुद्धा
विकारान्	Vikaaraan	modifications	प्रीति - द्वेषादि विकारों को	प्रीती द्वेष इत्यादी विकार
च	Cha	and	और	आणि
गुणान्	GuNaan	qualities	त्रिगुणात्मक सम्पूर्ण पदार्थों को	त्रिगुणात्मक संपूर्ण पदार्थ ही
च	Cha	and	और	आणि
एव	Eva	even	ही	तसेच
विद्धि	Viddhi	know	यह जान लो	(तू) जाण
प्रकृतिसंभवान्	Prakruti-SaMbhavaan	born of matter	प्रकृति से उत्पन्न होते है	प्रकृतीपासूनच उत्पन्न झालेले

अन्वय :- (त्वम्) प्रकृतिम् पुरुषम् च एव उभौ अपि अनादी विद्धि । विकारान् च गुणान् च प्रकृतिसंभवान् एव विद्धि ॥ १३ - २०॥

English translation:-

Know that matter (Prakriti) and Spirit (Purusha) are both beginning-less. Also know that all modifications and qualities are born of matter.

हिन्दी अनुवाद :-

प्रकृति और पुरुष इन दोनों को ही तुम अनादि जान लो; और प्रीति - द्वेषादि विकारों को तथा त्रिगुणात्मक सम्पूर्ण पदार्थोंको भी प्रकृति से ही उत्पन्न होते है, यह जान लो।

मराठी भाषान्तर :-

प्रकृती (क्षेत्र) आणि पुरुष (क्षेत्रज्ञ) हे दोघेही अनादी व नित्य आहेत हे तू जाणून घे. याशिवाय विकार आणि (तीन) गुण हे प्रकृतीपासून उत्पन्न होतात असे तू समज.

विनोबांची गीताई :-

प्रकृती पुरुषाची ही ज़ोडी ज़ाण अनादि तूं।
प्रकृतीपासुनी होती विकार गुण सर्व हि ॥ १३ - २०॥

कार्यकारणकर्तृत्वे हेतुः प्रकृतिः उच्यते ।

पुरुषः सुखदुःखानाम् भोक्तृत्वे हेतुः उच्यते ॥ १३ - २१॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
कार्यकारणकर्तृत्वे	Kaarya-KaaraNa-Kartrutva	in the production of effects and causes	कार्य याने शरीर और करण याने इन्द्रियों को उत्पन्न करने में	कार्य आणि करण यांच्या उत्पत्तीचे
हेतुः	HetuH	cause	हेतु	कारण
प्रकृतिः	PrakrutiH	matter	प्रकृति	प्रकृती
उच्यते	Uchyate	is said	कही जाती है	म्हटले जाते
पुरुषः	PuruShaH	Spirit	जीवात्मा	जीवात्मा
सुखदुःखानाम्	Sukha-DuHkhaanaam	of pleasures and pains	सुख दुःखों के	सुखदुःखाच्या
भोक्तृत्वे	Bhoktrutve	in the experience	भोक्तापन में अर्थात् भोगने में	भोगण्यामध्ये
हेतुः	HetuH	cause	हेतु	कारण
उच्यते	Uchyate	is said	कहा जाता है	म्हटला जातो

अन्वय :- प्रकृतिः कार्यकारणकर्तृत्वे हेतुः उच्यते । पुरुषः सुखदुःखानाम् भोक्तृत्वे हेतुः उच्यते ॥ १३ - २१॥

English translation:-

In the production of effect and cause, matter (Prakriti) is said to be the cause; however in the production of pleasure and pain, Spirit (Purusha) is said to be the cause.

हिन्दी अनुवाद :-

कार्य याने शरीर और करण याने इन्द्रियों को उत्पन्न करने में हेतु, प्रकृति कही जाती है; और सुख दुःखों के भोक्तापन में अर्थात् भोगने में हेतु, जीवात्मा कहा जाता है।

मराठी भाषान्तर :-

कार्य म्हणजे शरीर व करण म्हणजे इंद्रिये यांना उत्पन्न करण्यास प्रकृती कारण आहे आणि सुख दुःखाच्या भोगाला पुरुष म्हणजे जीवात्मा निमित्त आहे असे म्हणतात.

विनोबांची गीताई :-

देहेंद्रियांचें कर्तृत्व बोलिलें प्रकृतिकडे ।
दुःखा - सुखाचें भोक्तृत्व बोलिलें पुरुषाकडे ॥ १३ - २१॥

पुरुषः प्रकृतिस्थः हि भुङ्क्ते प्रकृतिजान् गुणान् ।

कारणम् गुणसङ्गः अस्य सत् असत् योनि जन्मसु ॥ १३ - २२॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
पुरुषः	PuruShaH	Spirit	पुरुष	पुरुष
प्रकृतिस्थः	PrakrutisthaH	seated in matter	प्रकृति अर्थात् त्रिगुणमयी माया में स्थित	प्रकृतीमध्ये स्थित
हि	Hi	indeed	ही	खरोखर
भुङ्क्ते	Bhunkte	enjoys	भोगता है	उपभोग घेतो
प्रकृतिजान्	Prakrutijaan	born of matter	प्रकृति से उत्पन्न	प्रकृतीपासून उत्पन्न झालेल्या
गुणान्	GuNaan	qualities	त्रिगुणात्मक पदार्थों को	(त्रिगुणात्मक) गुण
कारणम्	KaaraNam	the cause	कारण है	कारण
गुणसङ्गः	GuNasangaH	attachment to qualities	और इन गुणों का साथ ही	गुणांची आसक्ती
अस्य	Asya	of this	इस जीवात्मा के	या (जीवात्म्याच्या)
सत्	Sat	good	अच्छी	बऱ्या
असत्	Asat	evil	बुरी	वाईट
योनि	Yoni	wombs	योनियों में	योनींमध्ये
जन्मसु	Janmasu	of births	जन्म लेने का	जन्म घेण्यात

अन्वय :- पुरुषः प्रकृतिस्थः (सन्) प्रकृतिजान् गुणान् भुङ्क्ते हि । गुणसङ्गः अस्य सत् - असत् - योनि - जन्मसु कारणम् (अस्ति) ॥ १३ - २२ ॥

English translation:-

Spirit seated in matter indeed experiences the qualities born of the matter; attachment to the qualities is the cause of its birth in good and evil wombs.

हिन्दी अनुवाद :-

प्रकृति याने त्रिगुणमयी माया में स्थित ही पुरुष , प्रकृति से उत्पन्न , त्रिगुणात्मक पदार्थों को भोगता है और इन गुणों का साथ ही , इस जीवात्मा के , अच्छी - बुरी योनियों में , जन्म लेने का कारण है ।

मराठी भाषान्तर :-

पुरुष प्रकृतीत स्थित होऊन तो प्रकृतीपासून उत्पन्न झालेल्या सुखदुःख - मोहात्मक गुणांचा उपभोग घेतो आणि हा गुणसंयोग पुरुषाला म्हणजे जीवात्म्याला चांगल्या अथवा वाईट योनीत जन्म घेण्यास कारण होतो .

विनोबांची गीताई :-

बांधिला प्रकृतीनें तो तिचे ते गुण भोगितो ।
गुण - संगामुळें ह्यास घेणें जन्म शुभाशुभ ॥ १३ - २२॥

उपद्रष्टा अनुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः ।

परमात्मा इति च अपि उक्तः देहे अस्मिन् पुरुषः परः ॥ १३ - २३॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
उपद्रष्टा	UpadraShTaa	Witness / spectator	साक्षी होने से उपद्रष्टा	साक्षी
अनुमन्ता	Anumantaa	permitter	यथार्थ सम्मति देनेवाला होने से अनुमन्ता	यथार्थ संमती देणारा
च	Cha	and	और	आणि
भर्ता	Bhartaa	supporter	सबका धारण पोषण करनेवाला होने से भर्ता	सर्वांचे धारण पोषण करणारा असल्याने भर्ता
भोक्ता	Bhoktaa	enjoyer	जीवरूप से भोक्ता	भोक्ता
महेश्वरः	MaheshvaraH	the great Lord	ब्रह्मा आदिका भी स्वामी होने से महेश्वर	ब्रह्मदेव इत्यादींचा सुद्धा ईश्वर असल्याने महेश्वर
परमात्मा	Paramaatmaa	the Supreme Self	शुद्ध सच्चिदानन्दघन होने से परमात्मा	परमात्मा
इति	Iti	thus	ऐसा	असे
च	Cha	and	और	आणि
अपि	Api	also	तथा	सुद्धा
उक्तः	UktaH	is called	कहा गया है	म्हटले गेले आहे
देहे	Dehe	in the body	देह में स्थित	देहामध्ये
अस्मिन्	Asmin	(in) this	इस	या
पुरुषः	PuruShaH	Spirit	यह आत्मा वास्तव में	आत्मा
परः	ParaH	supreme	परमात्मा ही है	परमात्मा

अन्वय :- उपद्रष्टा अनुमन्ता भर्ता भोक्ता महेश्वरः अपि च परमात्मा इति उक्तः परः पुरुषः अस्मिन् देहे (अस्ति) ॥ १३ - २३॥

English translation:-

The supreme Spirit (Purusha) in this body is thus said to be the (dispassionate) Spectator (observer / witness), the permitter, the supporter, the enjoyer, the One who experiences, the Great Lord and the Supreme Self.

हिन्दी अनुवाद :-

इस देह में स्थित , यह आत्मा , वास्तव में परमात्मा ही है । वही साक्षी होने से उपद्रष्टा और यथार्थ सम्मति देनेवाला होने से अनुमन्ता , सब का धारण पोषण करनेवाला होने से भर्ता , जीवरूप से भोक्ता , ब्रह्मा आदिका भी स्वामी होने से महेश्वर और शुद्ध सच्चिदानन्दघन होने से परमात्मा ; ऐसा कहा गया है ।

मराठी भाषान्तर :-

पाहणारा , अनुमती देणारा , भरण - पोषण करणारा , उपभोग घेणारा सर्व ईश्वरांचा ईश्वर जो आहे त्यालाच या देहातील परमपुरुष किंवा परमात्मा असे म्हणतात .

विनोबांची गीताई :-

सर्व - साक्षी अनु - ज्ञाता भर्ता भोक्ता महेश्वर ।
म्हणती परमात्मा हि देहीं पुरुष तो पर ॥ १३ - २३॥

यः एवम् वेत्ति पुरुषम् प्रकृतिम् च गुणैः सह ।

सर्वथा वर्तमानः अपि न सः भूयः अभिजायते ॥ १३ – २४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यः	YaH	he who	जो मनुष्य	जो (मनुष्य)
एवम्	Evam	thus	इस प्रकार	अशाप्रकारे
वेत्ति	Vetti	knows	तत्त्व से जानता है	तत्त्वतः जाणतो
पुरुषम्	PuruSham	Spirit	पुरुष को	पुरुष
प्रकृतिम्	Prakrutim	matter	प्रकृति को	प्रकृती
च	Cha	and	और	आणि
गुणैः	GuNaiH	with qualities	गुणों के	गुणांनी
सह	Saha	with	सहित	सहित
सर्वथा	Sarvathaa	in all ways	सब प्रकार से	सर्व प्रकारांनी
वर्तमानः	VartamaanaH	living	कर्तव्य कर्म करता हुआ	कर्तव्य कर्मे करीत असणारा
अपि	Api	also	भी	तरी
न	Na	not	नहीं	नाही
सः	SaH	he	वह	तो (मनुष्य)
भूयः	BhuuyaH	again	फिर	पुन्हा
अभिजायते	Abhijaayate	is born	जन्मता	जन्माला येतो

अन्वय :- यः एवम् पुरुषम् गुणैः सह प्रकृतिम् च वेत्ति, सः सर्वथा वर्तमानः अपि भूयः न अभिजायते ॥ १३ – २४ ॥

English translation:-

He who knows the Spirit (Purusha) the matter (Prakriti) together with the qualities, is never born again, in whatever way he may live.

हिन्दी अनुवाद :-

इस प्रकार पुरुष को और गुणों के सहित प्रकृति को, जो मनुष्य तत्त्व से यथार्थरूप जानता है; वह सब प्रकार से कर्तव्य कर्म करता हुआ भी, पुनर्जन्म को प्राप्त नहीं होता है।

मराठी भाषान्तर :-

याप्रमाणे जो पुरुषाला व गुणांसह प्रकृतीला यथार्थपणे जाणतो; तो सर्व व्यवहार करूनही पुन्हा जन्माला येत नाही.

विनोबांची गीताई :-

पुरुषाचें असें रूप प्रकृतीचें गुणात्मक।
ज्ञाणे कसा हि तो राहो न पुन्हां जन्म पावतो ॥ १३ – २४ ॥

ध्यानेन आत्मनि पश्यन्ति केचित् आत्मानम् आत्मना ।

अन्ये सांख्येन योगेन कर्मयोगेन च अपरे ॥ १३ - २५॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
ध्यानेन	Dhyaanen	by meditation	ध्यान के द्वारा	ध्यानाने
आत्मनि	Aatmani	In self	हृदय में	हृदयात
पश्यन्ति	Pashyanti	behold	देखते हैं	पाहातात
केचित्	Kechit	some	कितने ही मनुष्य तो	काही माणसे
आत्मानम्	Aatmaanam	Self	परमात्मा को	आत्म्याला
आत्मना	Aatmanaa	by self	शुद्ध हुई सूक्ष्म बुद्धि से	आत्म्याने
अन्ये	Anye	others	अन्य कितने ही	इतर
सांख्येन - योगेन	SaaMkhyena - Yogena	by the Yoga of knowledge	ज्ञानयोग के द्वारा	ज्ञानयोगाने
कर्मयोगेन	Karma-Yogena	By the Yoga of action	कर्मयोग के द्वारा (देखते हैं अर्थात् प्राप्त करते हैं)	कर्मयोगाने (पाहातात म्हणजे प्राप्त करून घेतात)
च	Cha	and	और	आणि
अपरे	Apare	others	दूसरे कितने ही	दुसरे

अन्वय :- केचित् ध्यानेन आत्मना आत्मनि आत्मानम् पश्यन्ति । अन्ये सांख्येन योगेन (आत्मानम् पश्यन्ति) , अपरे च कर्मयोगेन (आत्मानम् पश्यन्ति) ॥ १३ - २५ ॥

English translation:-

By meditation some behold the Self in the self by the self; others by the Yoga of knowledge while yet others by the Yoga of action.

हिन्दी अनुवाद :-

परमात्मा को कितने ही मनुष्य तो , शुद्ध हुई सूक्ष्म बुद्धि से , ध्यान के द्वारा हृदय में देखते हैं ; अन्य कितने ही , ज्ञान योग के द्वारा और दूसरे कितने ही कर्मयोग के द्वारा , देखते हैं अर्थात् प्राप्त करते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

काही साधक आपल्या अंतःकरणामध्येच ध्यानाच्या योगाने आत्म्याला आपल्या ठायी पाहतात . काही साधक ज्ञानयोगाने (सांख्ययोगाने) तर काही कर्मयोगाच्या सहाय्याने आत्म्याला पाहतात .

विनोबांची गीताई :-

ध्यानानें पाहती कोणी स्वयें आत्म्यास अंतरीं ।
सांख्य - योगें तसें कोणी कर्म - योगें हि आणिक ॥ १३ - २५ ॥

अन्ये तु एवम् अजानन्तः श्रुत्वा अन्येभ्यः उपासते ।

ते अपि च अतितरन्ति एव मृत्युम् श्रुतिपरायणाः ॥ १३ - २६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अन्ये	Anye	others	इनसे दूसरे अर्थात् जो मन्द बुद्धिवाले पुरुष हैं वे	इतर
तु	Tu	indeed	परन्तु	परंतु
एवम्	Evam	thus	इस प्रकार	अशा प्रकारे
अजानन्तः	AjaanantaH	not knowing	न जानते हुए	न जाणता
श्रुत्वा	Shrutvaa	having heard	सुनकर ही तदनुसार	ऐकूनच त्याप्रमाणे
अन्येभ्यः	AnyebhyaH	from others	दूसरों से अर्थात् तत्त्व के जानने वाले पुरुषों से	दुसऱ्यांकडून (तत्त्व जाणणाऱ्या ज्ञानी माणसांकडून)
उपासते	Upaasate	worship	उपासना करते हैं	उपासना करतात
ते	Te	they	वे	ती
अपि	Api	also	भी	सुद्धा
च	Cha	and	और	आणि
अतितरन्ति	Atitaranti	cross beyond	निःसन्देह तर जाते हैं	तरून जातात
एव	Eva	even	भी	तसेच
मृत्युम्	Mrutyum	death	मृत्युरूप संसार सागर को	मृत्यु (संसारसागर)
श्रुतिपरायणाः	Shruti-ParaayaNaaH	regarding what they have heard as the supreme refuge	श्रवणपरायण पुरुष	श्रवण परायण माणसे

अन्वय :- अन्ये तु एवम् अजानन्तः अन्येभ्यः श्रुत्वा उपासते, ते श्रुतिपरायणाः च अपि मृत्युम् अतितरन्ति एव ॥ १३ - २६॥

English translation:-

Yet others, not knowing thus, worship the Supreme having heard from others, and they too cross beyond death while taking refuge in what they have heard.

हिन्दी अनुवाद :-

परन्तु इनसे दूसरे अर्थात् जो मन्द बुद्धिवाले पुरुष हैं, वे इस प्रकार - ध्यानयोग, ज्ञानयोग और कर्मयोग इत्यादि न जानते हुए - दूसरों से अर्थात् तत्त्व के जानने वाले पुरुषों से सुनकर ही तदनुसार उपासना करते हैं; और वे श्रवणपरायण पुरुष भी श्रद्धारूपी नौका द्वारा, मृत्युरूप संसार सागर को, निःसन्देह पार कर जाते हैं।

मराठी भाषान्तर :-

दुसरे काही आत्म्याला न जाणणारे अज्ञानी लोक दुसऱ्यांपासून म्हणजे गुरूंपासून ऐकून घेऊन त्यांनी सांगितल्याप्रमाणे उपासना करतात. गुरूंपासून ऐकलेली गोष्ट प्रमाण मानणारे असे श्रुतिपरायण साधक; मृत्यूच्या पलीकडे जातात.

विनोबांची गीताई :-

स्वयें नेणूनियां कोणी थोरांपासूनि ऐकती।
तरती ते हि मृत्यूस श्रद्धेनें वर्तुनी तसें॥ १३ - २६ ॥

यावत् सञ्जायते किंचित् सत्त्वम् स्थावरजङ्गमम् ।

क्षेत्र क्षेत्रज्ञ संयोगात् तत् विद्धि भरतर्षभ ॥ १३ – २७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यावत्	Yaavat	whatever	जो भी	जे जे
सञ्जायते	SaMjaayate	is born	उत्पन्न होते हैं	उत्पन्न होतात
किंचित्	KiMchit	any	जितने भी	जितके
सत्त्वम्	Sattvam	being	प्राणी	प्राणी
स्थावरजङ्गमम्	Sthaavara-Jangam	the unmoving and the moving	चर और अचर	चर - अचर
क्षेत्र	Kshetra	field	प्रकृति / सृष्टि / क्षेत्र	प्रकृति / क्षेत्र
क्षेत्रज्ञ	Kshetradnya	knower of field	पुरुष / स्रष्टा / क्षेत्र को जाननेवाला	पुरुष / क्षेत्रज्ञ
संयोगात्	SaMyogaat	from the union of	संयोग से ही	संयोगामुळे (उत्पन्न)
तत्	Tat	that	उन सब को तुम	ते
विद्धि	Viddhi	know	यह जान लो	तू जाण
भरत - ऋषभ	Bharata - RhiShabha	O the best (bull) among Bharatas!	हे भरत कुलोत्पन्न अर्जुन !	हे अर्जुना !

अन्वय :- हे भरतर्षभ ! यावत् किंचित् स्थावरजङ्गमम् सत्त्वम् संजायते , तत् क्षेत्र - क्षेत्रज्ञ संयोगात् (संजायते इति त्वम्) विद्धि ॥ १३ – २७ ॥

English translation:-

O best (bull) among the Bharatas! Whatever being is born, moving or unmoving; know it to be born from the union of the field and the knower of the field.

हिन्दी अनुवाद :-

हे भरत कुलोत्पन्न अर्जुन ! जो भी , जितने भी , चर और अचर प्राणी उत्पन्न होते हैं ; उन सब को तुम , प्रकृति और पुरुष तथा सृष्टि और स्त्रष्टा याने क्षेत्र और क्षेत्र को जाननेवाले के संयोग से ही , उत्पन्न होते है , यह जान लो ।

मराठी भाषान्तर :-

हे भरतश्रेष्ठ अर्जुना ! जेवढे काही निर्जीव (अचर) आणि सजीव (चर) प्राणिमात्र उत्पन्न होतात ; ते सर्व क्षेत्र व क्षेत्रज्ञ यांच्या संयोगाने उत्पन्न होतात , हे तू जाण .

विनोबांची गीताई :-

उत्पन्न होतसे लोकीं जें जें स्थावर जंगम ।

क्षेत्र - क्षेत्रज्ञ - संयोगें घडिलें ज्ञाण सर्व तें ॥ १३ – २७ ॥

समम् सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तम् परमेश्वरम् ।

विनश्यत्सु अविनश्यन्तम् यः पश्यति सः पश्यति ॥ १३ - २८ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
समम्	Samam	equally	समभाव से	समभावाने
सर्वेषु	SarveShu	(in) all	सब	सर्वात
भूतेषु	BhuuteShu	in beings	चराचर भूतों में	प्राणिमात्रांमध्ये
तिष्ठन्तम्	TiShThantam	existing	स्थित	राहणाऱ्या
परमेश्वरम्	Parameshvaram	The Supreme Lord	परमेश्वर को	परमेश्वराला
विनश्यत्सु	Vinashyatsu	among the perishables	नष्ट होते हुए	नष्ट होणाऱ्या
अविनश्यन्तम्	Avinashyantam	Imperishable	नाशरहित	नाशरहित
यः	YaH	who	जो मनुष्य	जो (मनुष्य)
पश्यति	Pashyati	sees	देखता है	पाहतो
सः	SaH	he	वही	तो
पश्यति	Pashyati	sees	वास्तव में ईश्वर का दर्शन करता है	(परमेश्वराला यथार्थपणे) पाहतो

अन्वय :- यः विनश्यत्सु सर्वेषु भूतेषु समम् तिष्ठन्तम् अविनश्यन्तम् परमेश्वरम् पश्यति , सः पश्यति ॥ १३ - २८ ॥

English translation:-

He who sees the Supreme Lord existing equally in all beings as the Imperishable among the perishable – he sees (it all).

हिन्दी अनुवाद :-

जो मनुष्य नष्ट होते हुए सब चराचर भूतों में परमेश्वर को नाशरहित और समभाव से स्थित देखता है ; वही वास्तव में ईश्वर का दर्शन करता है ।

मराठी भाषान्तर :-

सर्व प्राणिमात्रांच्या अंतःकरणात समभावाने राहणारा व सर्व प्राणिमात्र नाश पावले तरी स्वतः नाश न पावणारा असा तो परमेश्वर जो पाहतो ; तोच खरा डोळस .

विनोबांची गीताई :-

समान सर्व भूतांत राहिला परमेश्वर ।
अनाशी नाशवंतांत जो पाहे तो चि पाहतो ॥ १३ - २८ ॥

समम् पश्यन् हि सर्वत्र समवस्थितम् ईश्वरम् ।

न हिनस्ति आत्मना आत्मानम् ततः याति पराम् गतिम् ॥ १३ - २९ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
समम्	Samam	equally	समान	समानपणे
पश्यन्	Pashyan	seeing	देखता हुआ	पाहणारा
हि	Hi	indeed	क्योंकि जो मनुष्य	कारण
सर्वत्र	Sarvatra	everywhere	सब में	सर्वांमध्ये
समवस्थितम्	Samavasthitam	equally dwelling	समभाव से स्थित	समभावाने स्थित असणाऱ्या
ईश्वरम्	Iishvaram	Lord	परमेश्वर को	परमेश्वराला
न	Na	not	नहीं	नाही
हिनस्ति	Hinasti	destroys	नष्ट करता	नष्ट करतो
आत्मना	Aatmanaa	by the self	अपने द्वारा	आपल्याद्वारा
आत्मानम्	Aatmaanam	the Self	अपने को अर्थात् किसी को भी	आपल्याला
ततः	TataH	then	इससे वह	त्यामुळे
याति	Yaati	goes	प्राप्त होता है	प्राप्त होतो
पराम्	Paraam	the highest / Supreme	परम	श्रेष्ठ
गतिम्	Gatim	the state / goal	गति को	गतीला

अन्वय :- (यः) सर्वत्र समवस्थितम् ईश्वरम् समम् पश्यन् हि आत्मना आत्मानम् न हिनस्ति , (सः) ततः पराम् गतिम् याति ॥ १३ - २९ ॥

English translation:-

Seeing the same entity – the Supreme Lord – dwelling equally everywhere, he does not destroy the Self by the self, and therefore he reaches the Supreme Goal (the Self realisation).

हिन्दी अनुवाद :-

क्योंकि जो मनुष्य , सब में समभाव से स्थित परमेश्वर को , समान देखता हुआ , अपने द्वारा अपने को अर्थात किसी को भी नष्ट नहीं करता ; इससे वह परम गति को प्राप्त होता है ।

मराठी भाषान्तर :-

सर्व प्राणिमात्रांत सर्वत्र सारखा भरलेला परमेश्वर आहे असे जो समबुद्धीने पाहतो ; तो आत्मघातकी न होता उत्तम गतीला प्राप्त होतो .

विनोबांची गीताई :-

ज़ो पाहे प्रभु सर्वत्र भरला सम तो स्वयें ।
आत्म्याची न करी हिंसा गति उत्तम मेळवी ॥ १३ - २९ ॥

प्रकृत्या एव च कर्माणि क्रियमाणानि सर्वशः ।

यः पश्यति तथा आत्मानम् अकर्तारम् सः पश्यति ॥ १३ - ३० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
प्रकृत्या	Prakrutyaa	by matter	प्रकृति के द्वारा	प्रकृतीच्या
एव	Eva	alone	ही	केवळ
च	Cha	and	और	आणि
कर्माणि	KarmaaNi	actions	सम्पूर्ण कर्मों को	सर्व कर्मे
क्रियमाणानि	Kriya-MaaNaani	being performed	किये जाते हुए	केली जाणारी
सर्वशः	SarvashaH	entirely	सब प्रकार से	सर्व प्रकारांनी
यः	YaH	he who	जो मनुष्य	जो (मनुष्य)
पश्यति	Pashyati	sees	देखता है	पाहतो
तथा	Tathaa	so also	और	तसेच
आत्मानम्	Aatmaanam	the Self	आत्मा को	आत्म्याला
अकर्तारम्	Akartaaram	action-less	अकर्ता देखता है	अकर्ता
सः	SaH	he	वही	तोच
पश्यति	Pashyati	sees	यथार्थ देखता है	(परमेश्वराला यथार्थपणे) पाहतो

अन्वय :- यः च प्रकृत्या एव कर्माणि सर्वशः क्रियमाणानि (सन्ति इति पश्यति) तथा आत्मानम् अकर्तारम् पश्यति, सः पश्यति ॥ १३ - ३०॥

English translation:-

He verily sees who sees that all actions are performed by Prakruti alone and that the Self is actionless.

हिन्दी अनुवाद :-

और जो मनुष्य, सम्पूर्ण कर्मों को, सब प्रकार से, प्रकृति के द्वारा ही किये जाते हुए देखता है और आत्मा को अकर्ता देखता है; वही यथार्थ देखता है और वही ज्ञानी मनुष्य है।

मराठी भाषान्तर :-

सर्व कर्मे सर्वप्रकारे प्रकृतीकडूनच केली जातात आणि आत्मा अकर्ता आहे असे जो पाहतो तोच सत्य पाहतो.

विनोबांची गीताई :-

प्रकृतीच्या चि तंत्रानें कर्मे होतात सर्व हि।

आत्मा तो न करी कांही हें पाहे तो चि पाहतो ॥ १३ - ३०॥

यदा भूतपृथग्भावम् एकस्थम् अनुपश्यति ।

ततः एव च विस्तारम् ब्रह्म संपद्यते तदा ॥ १३ - ३१ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यदा	Yadaa	when	जिस क्षण यह मनुष्य	जेव्हा (ज्या क्षणी मनुष्य)
भूतपृथग्भावम्	Bhuuta-Pruthagbhaavam	the whole variety of beings	भूतों के अलग अलग भाव को	प्राणिमात्रांचे वेगवेगळे भाव
एकस्थम्	Ekastham	resting in the One	एक परमात्मा में ही स्थित	एकाच ठिकाणी स्थित (परमात्म्यामध्ये स्थित)
अनुपश्यति	Anupashyati	(he) sees / perceives	देखता है	पाहतो
ततः	TataH	from that	उस परमात्मा से	त्या (परमात्म्यापासूनच)
एव	Eva	alone	ही	केवळ
च	Cha	and	तथा	तसेच
विस्तारम्	Vistaaram	spreading	सम्पूर्ण भूतों का विस्तार	(संपूर्ण भूतांचा) विस्तार (झाला आहे)
ब्रह्म	Brahma	Brahman	सच्चिदानन्दघन ब्रह्म को	ब्रह्म
संपद्यते	Sampadyate	(he) becomes	प्राप्त हो जाता है	प्राप्त करून घेतो
तदा	Tadaa	then	उसी क्षण वह	तेव्हा (त्याच क्षणी)

अन्वय :- यदा भूतपृथग्भावम् एकस्थम् (च) ततः एव च विस्तारम् अनुपश्यति , तदा ब्रह्म संपद्यते ॥ १३ - ३१ ॥

English translation:-

When he realises the diversified variety of beings as resting in the One – that Singular Entity i.e. the Brahman – and all that he sees has originated from that One alone; then he becomes one with the Brahman.

हिन्दी अनुवाद :-

जिस क्षण , यह मनुष्य , भूतों के अलग अलग भाव को एक परमात्मा में ही स्थित देखता है ; तथा उस परमात्मा से ही सम्पूर्ण भूतों का विस्तार देखता है ; उसी क्षण , वह सच्चिदानन्दघन ब्रह्म को , प्राप्त हो जाता है ।

मराठी भाषान्तर :-

जेव्हा साधक सर्व प्राणिमात्रांतील भिन्नपणा , एकाच परमात्म्यांत स्थित आहे आणि त्या परमात्म्यापासूनच सर्व प्राणिमात्रांचा विस्तार झाला आहे हे जाणू लागतो तेव्हा त्याला ब्रह्माची प्राप्ती होते .

विनोबांची गीताई :-

एकत्वीं ज़ोडिलें पाहे भूतांचे वेगळेपण ।

त्यामधूनि चि विस्तार तेव्हां ब्रह्मत्व लाभलें ॥ १३ - ३१ ॥

अनादित्वात् निर्गुणत्वात् परमात्मा अयम् अव्ययः ।

शरीरस्थः अपि कौन्तेय न करोति न लिप्यते ॥ १३ - ३२॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अनादित्वात्	Anaaditvaat	being without beginning	अनादि होने से और	अनादी असल्यामुळे
निर्गुणत्वात्	NirguNatvaat	being without qualities	निर्गुण होने से	निर्गुण असल्यामुळे
परमात्मा	Paramaatmaa	The Supreme Self	परमात्मा	परमात्मा
अयम्	Ayam	this	यह	हा
अव्ययः	AvyayaH	imperishable	अविनाशी	अविनाशी
शरीरस्थः	ShariirasthaH	dwelling in body	शरीर में स्थित होनेपर	शरीरात स्थित
अपि	Api	though	भी वास्तव में	जरी
कौन्तेय	Kaunteya	O Arjuna!	हे अर्जुन	हे अर्जुना !
न	Na	not	न	नाही
करोति	Karoti	acts / does	तो कुछ करता है	करतो
न	Na	not	और न	नाही
लिप्यते	Lipyate	is tainted	कर्मफलों से लिप्त तथा मलिन भी होता है	लिप्त होतो

अन्वय :- हे कौन्तेय ! अयम् परमात्मा अनादित्वात् , निर्गुणत्वात्, अव्ययः (अस्ति , अतः सः) शरीरस्थः (सन्) अपि न करोति , न (च) लिप्यते ॥ १३ - ३२॥

English translation:-

O Arjuna! Having no beginning and possessing no qualities (Gunas), this Supreme Self, imperishable, though dwelling in the body, the Brahman neither acts nor is tainted.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! अनादि होने से और निर्गुण होने से , यह अविनाशी परमात्मा , शरीर में स्थित होनेपर भी , वास्तव में न तो कुछ करता है और न कर्मफलों से लिप्त तथा मलिन भी होता है ।

मराठी भाषान्तर :-

हे कुंतीपुत्र अर्जुना ! हा परमात्मा अनादि व निर्गुण असल्यमुळे तो अक्षय व अविनाशी आहे त्यामुळे शरीरात स्थित असूनही तो काही करत नाही व कर्मफलाने मलीन होत नाही .

विनोबांची गीताई :-

परमात्मा न वेंचे चि कीं निर्गुण अनादि हा ।
राहे देहीं परी कांहीं न करी न मळे चि तो ॥ १३ - ३२॥

यथा सर्वगतम् सौक्ष्म्यात् आकाशम् न उपलिप्यते ।

सर्वत्र अवस्थितः देहे तथा आत्मा न उपलिप्यते ॥ १३ - ३३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यथा	Yatha	as	जिस प्रकार	ज्याप्रमाणे
सर्वगतम्	Sarvagatam	all - pervading	सर्वत्र व्याप्त	सर्वत्र व्याप्त
सौक्ष्म्यात्	Saukshmyaat	due to its subtlety	सूक्ष्म होने के कारण	सूक्ष्म असल्यामुळे
आकाशम्	Aakaasham	space	आकाश	आकाश
न	Na	not	नहीं	नाही
उपलिप्यते	Upalipyate	is tainted	लिप्त होता है	लिप्त होते
सर्वत्र	Sarvatra	everywhere	सर्वत्र	सर्वत्र
अवस्थितः	AvasthitaH	seated	स्थित	स्थित असलेला
देहे	Dehe	in body	देह में	देहामध्ये
तथा	Tathaa	so	वैसे ही	त्याप्रमाणे
आत्मा	Aatmaa	the Self	आत्मा निर्गुण होने के कारण देह के गुणों से	आत्मा
न	Na	not	नहीं	नाही
उपलिप्यते	Upalipyate	is tainted	लिप्त होता है	मलिन होतो

अन्वय :- यथा सर्वगतम् आकाशम् सौक्ष्म्यात् न उपलिप्यते, तथा सर्वत्र देहे अवस्थितः आत्मा न उपलिप्यते ॥ १३ - ३३ ॥

English translation:-

As the all-pervading space is not tainted due to its subtlety, so the Self seated in the body everywhere is not tainted.

हिन्दी अनुवाद :-

जिस प्रकार, सर्वत्र व्याप्त आकाश, सूक्ष्म होने के कारण लिप्त नहीं होता है अर्थात् किसी भी विकार से दूषित नहीं होता है; वैसे ही देह में सर्वत्र स्थित आत्मा, निर्गुण होने के कारण, देह के गुणों से लिप्त नहीं होता है अर्थात् किसी भी विकार से दूषित नहीं होता है।

मराठी भाषान्तर :-

ज्याप्रमाणे सर्वव्यापी आकाश अत्यंत सूक्ष्म असल्यामुळे कोणत्याही प्रकारे कलंकित होत नाही त्याचप्रमाणे शरीरात व्यापून असणारा आत्माही मलिन होत नाही.

विनोबांची गीताई :-

सर्व व्यापूनि आकाश सूक्ष्मत्वें न मळे ज़सें।
सर्वत्र भरला देहीं आत्मा तो न मळे तसा ॥ १३ - ३३ ॥

यथा प्रकाशयति एकः कृत्स्नम् लोकम् इमम् रविः ।

क्षेत्रम् क्षेत्री तथा कृत्स्नम् प्रकाशयति भारत ॥ १३ - ३४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यथा	Yathaa	as	जिस प्रकार	ज्याप्रमाणे
प्रकाशयति	Prakaashayati	illuminates / illumines	प्रकाशित करता है	प्रकाशित करतो
एकः	EkaH	one	एक ही	एक
कृत्स्नम्	Krutsnam	the whole	सम्पूर्ण	संपूर्ण
लोकम्	Lokam	the world	ब्रह्माण्ड को	ब्रह्मांडाला
इमम्	Imam	this	इस	या
रविः	RaviH	sun	सूर्य	सूर्य
क्षेत्रम्	Kshetram	field	क्षेत्र को	क्षेत्राला
क्षेत्री	Kshetree	the Lord of the field	एक ही आत्मा	एकच आत्मा
तथा	Tathaa	so	उसी प्रकार	त्याप्रमाणे
कृत्स्नम्	Krutsnam	the whole	सम्पूर्ण	संपूर्ण
प्रकाशयति	Prakaashayati	illuminates / illumines	प्रकाशित करता है तथा चेतना प्रदान करता है	प्रकाशित करतो
भारत	Bhaarata	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !

अन्वय :- हे भारत ! यथा एकः रविः इमम् कृत्स्नम् लोकम् प्रकाशयति , तथा क्षेत्री कृत्स्नम् क्षेत्रम् प्रकाशयति ॥ १३ - ३४ ॥

English translation:-

As the one sun illuminates the whole world, so does the Lord of the field (the Brahman) illuminate the whole field (body).

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! जिस प्रकार एक ही सूर्य इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को प्रकाशित करता है , उसी प्रकार एक ही आत्मा , सम्पूर्ण क्षेत्र को प्रकाशित करता है तथा शरीर को चेतना प्रदान करता है ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! ज्याप्रमाणे एकटा सूर्य सर्व जगाला प्रकाशित करतो त्याप्रमाणे एकच क्षेत्रज्ञ म्हणजे आत्मा सर्व क्षेत्राला म्हणजे शरीराला प्रकाशित करतो .

विनोबांची गीताई :-

एकला चि ज़सा सूर्य उज़ळी भुवन त्रय ।

तसा क्षेत्रज्ञ तो क्षेत्र संपूर्ण उज़ळीतसे ॥ १३ - ३४ ॥

क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोः एवम् अन्तरम् ज्ञानचक्षुषा ।

भूत प्रकृतिमोक्षम् च ये विदुः यान्ति ते परम् ॥ १३ - ३५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोः	Kshetra-KshetradnayoH	between the field and the knower of the field	क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के	क्षेत्र आणि क्षेत्रज्ञ यांतील
एवम्	Evam	thus	इस प्रकार	अशाप्रकारे
अन्तरम्	Antaram	distinction	भेद को	भेद
ज्ञानचक्षुषा	Dnyana-ChakshuShaa	by the eye of knowledge / wisdom	ज्ञान नेत्रों द्वारा	ज्ञानरूपी नेत्रांनी
भूत	Bhuuta	being	जीव के	प्राणिमात्र
प्रकृतिमोक्षम्	Prakruti-Moksham	liberation from matter	प्रकृति के विकारों से मुक्त होने को	प्रकृतीपासून सुटका
च	Cha	and	तथा	तसेच
ये	Ye	they	जो ज्ञानी पुरुष	जे पुरुष
विदुः	ViduH	know	तत्त्व से जानते हैं	(तत्त्वतः) जाणतात
यान्ति	Yaanti	go	प्राप्त होते हैं	प्राप्त करून घेतात
ते	Te	they	वे महात्माजन	ते (महात्मा जन)
परम्	Param	to the Supreme	परम ब्रह्म परमात्मा को	श्रेष्ठ (परमब्रह्म परमात्म्याला)

अन्वय :- ये एवम् ज्ञानचक्षुषा क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोः अन्तरम् (ज्ञानम्) भूतप्रकृतिमोक्षम् च विदुः , ते परम् यान्ति ॥ १३ - ३५ ॥

English translation:-

They who with the eye of wisdom perceive thus the distinction between the field (Kshetra) and the knower of the field (Kshetradnya); and the liberation of beings from matter (Prakriti), they go to the Supreme – the Brahman.

हिन्दी अनुवाद :-

इस प्रकार , क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ (शरीर और परमात्मा तथा सृष्टि और स्त्रष्टा) के भेद को , तथा जीव के कार्यसहित प्रकृति के विकारों से मुक्त होने को , जो पुरुष ज्ञान - नेत्रों द्वारा तत्त्व से जानते हैं ; वे महात्माजन , परम ब्रह्म - परमात्मा को प्राप्त होते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

याप्रमाणे क्षेत्र व क्षेत्रज्ञ यांच्यातील फरक आणि प्रकृती व तिचे विकार यातून सुटण्याचा उपाय ज्ञान दृष्टीने जे जाणतात ते ज्ञानी परमगतीला प्राप्त होतात .

विनोबांची गीताई :-

पाहती ज्ञान दृष्टीनें क्षेत्र क्षेत्रज्ञ भेद हा ।
भूत - प्रकृति लंघूनि ते ब्रह्म - पद पावती ॥ १३ - ३५ ॥

ॐ तत् सत् इति श्रीमद् भगवद् गीतासु उपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायाम् योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोगो नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥

हरिः ॐ तत् सत् । हरिः ॐ तत् सत् । हरिः ॐ तत् सत् ।

Om that is real. Thus, in the Upanishad of the glorious Bhagwad Geeta, the knowledge of Brahman, the Supreme, the science of Yoga and the dialogue between Shri Krishna and Arjuna this is the thirteenth discourse designated as "The Yoga of the distinction between field and knower of field".

तेराव्या अध्यायाचा एका श्लोकात मथितार्थ

क्षेत्र क्षेत्रज्ञ दोन्ही कथुनि मग पुढें कृष्ण पार्थासि सांगे ।
ज्ञानी त्यातें म्हणावा मज भजुनि सदा जो मदानें न वागे ॥
तैसा ज्या भेद बाणे प्रकृतिपुरुषिचा सर्व ठायीं समत्व ।
कर्मांची त्यासि बाधा तिळभरहि नसे पावला जो प्रभुत्व ॥

गीता सुगीता कर्तव्या किम् अन्यैः शास्त्रविस्तरैः ।
या स्वयम् पद्मनाभस्य मुखपद्माद् विनिःसृता ॥

गीता सुगीता करण्याजोगी आहे म्हणजेच गीता उत्तम प्रकारे वाचून तिचा अर्थ आणि भाव अन्तःकरणात साठवणे हे कर्तव्य आहे. स्वतः पद्मनाभ भगवान् श्रीविष्णूंच्या मुखकमलातून गीता प्रगट झाली आहे. मग इतर शास्त्रांच्या फाफटपसाऱ्याची जरूरच काय ?

- श्री महर्षी व्यास

विनोबांची गीताई :-

गीताई माउली माझी तिचा मी बाळ नेणता ।
पडतां रडतां घेई उचलूनि कडेवरी ॥